

वॉल स्ट्रीट की हस्तरेखा शास्त्री: आगे की कड़ी II

मैंने मियामी लौटने की योजना बना ली थी।

छह महीने।

आराम करने, अपनी स्पेनिश निखारने, और क्यूबाई स्त्रियों को करीब से समझने के लिए काफ़ी समय।

वे हमेशा से मेरा पसंदीदा शिकार रही थीं।

मैं एक सुपरमार्केट में घुसा, और नियति ठेले से पहले वहां पहुँच चुकी थी।

एक स्त्री मेरे सामने प्रकट हुई।

क्यूबाई।

मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। उसने मुझे पहचान लिया। उसने कुछ सेकंड मुझे घूरा। फिर उसने कहा:

“तुम यहां आखिर कर क्या रहे हो?”

“सामान खरीद रहा हूँ।”

“नहीं। मेरा मतलब है, धरती पर। क्या तुम्हें अब तक नरक में नहीं होना चाहिए था?”

मैंने उसकी अंग्रेज़ी की तारीफ़ की। निर्दोष। सबसे बेहतरीन स्त्रियां हमेशा एक साथ दो लोग बनने का हुनर रखती हैं। जब उन्हें जानकारी चाहिए तो मीठी, और मिल जाने के बाद निर्मम।

उसने पूछा मैं कैसा था। मेरी सेहत कैसी थी। मैं अब तक ज़िंदा कैसे। मेरी पत्नी कहां थी। और, सबसे बड़कर: “तुम जवान कैसे बने रहे और खुद शैतान को कैसे हरा दिया?”

मैंने उसे बताया मुझे एक बस पकड़नी है। यह सच था। मैंने यह नहीं बताया कि कहां जाने के लिए। मैंने विदा ली और गायब हो गया।

...

घर पहुँचकर, मैं तुरंत सो गया।

सपने में, मैंने किसी को इटली में अपने घर की सीढ़ियां चढ़ते देखा। मैं उसे जानता था। या शायद नहीं जानता था। फिर मुझे एहसास हुआ। वह वही था। सिनसिनाटी वाला भारतीय। हस्ताक्षरित डॉलर के नोट वाला।

वह सबसे ऊपरी सीढ़ी पर पहुँचा। मुझे गले लगाया। उस ब्रिटिश शालीनता से मुस्कराया जो कुछ भारतीय खुद ब्रिटिशों से बेहतर निभाते हैं। फिर उसने गंभीरता से मेरी ओर देखा।

“फ्रेगा, कृपया — बाथरूम कहां है?”

मैं चौंककर जाग उठा। बाथरूम का दरवाज़ा डूंडने लगा। फिर एहसास हुआ कि मैं अब भी सपने के भीतर ही था।

मैं मुड़ा। लाल आर्मचेयर पर कोई बैठा था। फिर वही। बॉस्टन का भूत। हंसता हुआ।

“मुझे पता था तुम डरे नहीं। तुम हिम्मत वाले आदमी हो।”

फिर उसने अपने बगल में किसी की ओर इशारा किया। “देखो मैं किसे लाया हूँ।”

...

एक लंबी स्त्री। सुरुचिपूर्ण। अमेरिकी। लगभग चालीस वर्ष की। एक कार्यकारी अधिकारी जैसी मुद्रा। एसी नज़र जैसे किसी ने दूसरों की जिंदगियां खत्म करने वाले दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किए हों।

उसने हाथ बढ़ाया। “कॉपीराइट कार्यालय। वाशिंगटन डी.सी.”

मैंने सिर हिलाया। “बड़ी तरक्की है। यहां कैसे पहुँचीं?”

“मुझे तुम्हारी तरफ़ से एक ईमेल मिला था।”

“फिर?”

“मैंने उसे पढ़ा।”

“फिर?”

“मेरा दिल बर्दाश्त नहीं कर सका।”

भूत ज़ोर से हंस पड़ा। मैं नहीं हंसा।

“मुझे खेद है।”

“मत करो।”

“नहीं, सच में।”

“नहीं, सच में — मुझे भी।”

...

वह बैठ गई। उसने कमरे को देखा। मुझे देखा। फिर कहा:

“तुम वही आदमी हो जिसका मैं पूरी जिंदगी से इंतज़ार करती रही।”

“किसी से मिलने का यह तो काफ़ी जटिल तरीका लगता है।”

“यह सबसे अच्छा था जो मुझे मिल सका।”

“नहीं। मुझ पर भरोसा करो। यह सबसे अच्छा नहीं था।”

वह कुछ देर के लिए चुप हो गई। फिर मैंने उससे वह इकलौता सवाल पूछा जो मायने रखता था।

“कॉपीराइट कार्यालय से पहले — तुम कहां काम करती थीं?”

“एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी में। डिटर्जेंट।”

“कैसा था?”

“लक्ष्य पाने के लिए, मरना पड़ता है।”

“मतलब?”

“शाब्दिक रूप से। वे तुमसे तब तक काम करवाते हैं जब तक तुम टूट न जाओ।”

...

मैं चुप रहा। फिर मुस्कुराया।

“मुझे खेद है, प्रिये।”

“किस बात का?”

“तुमने गलत आयाम चुन लिया।”

“क्षमा करें?”

“जिंदगी में, हमेशा — सिर्फ और सिर्फ — शैली की बात होती है।”

मैंने खिड़की की ओर इशारा किया। धरती अब भी वहीं थी। उलझी हुई। शोर भरी हुई। समस्याओं से भरी हुई।

“मैं सबकी सुनता हूं।”

“भूतों की भी?”

“खासकर उनकी।”

“तो फिर हमारे साथ क्यों नहीं चलते?”

“क्योंकि मुझे अभी यहां कुछ पूरा करना बाकी है।”

बॉस्टन के भूत ने सिर हिलाया। कार्यकारी अधिकारी ने नड़रें जुका लीं। वह निराश दिख रही थी।

...

मैं उठ खड़ा हुआ। दरवाज़े की ओर चला। फिर मुड़ा।

“वैसे —”

“क्या?”

“मैं भी डिटर्जेंट के धंधे में हूँ, संयोग से।”

“तो?”

“पर मैं अपने लक्ष्य पाने के लिए किसी के मरने का इंतज़ार नहीं करता।”

भूत ज़ोर से हंस पड़ा। वह मुस्कुराई — पहली बार।

जब मैंने फिर आंखें खोलीं, तो मैं अकेला था। कमरे में कोई नहीं बचा था। न भूत। न कार्यकारी अधिकारी। न बाथरूम डूँड़ता कोई भारतीय।

बस लाल आर्मचेयर। अब भी मुझे देख रही थी। मानो उसे पहले से पता हो कि अगली रात कौन आने वाला है।

Ferdinando Frega

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com